हिमालय को समझने की अनोखी मुहिम

हिमालय को बचाने के लिए डॉ. निशंक की अवधारणा- स्पर्श हिमालय अभियान

डॉ. वीरेंद्र बर्त्वाल

आज हमें हिमालय को समझने की आवश्यकता है। हिमालय सुरक्षित रहेगा तो हम भी सुरक्षित रह पाएंगे। हमारे मस्तिष्क हिमालय पर कोई दर्द होगा तो हम चैन से नहीं रह पाएंगे। आज के बदलते पर्यावरणीय दौर में हमें हिमालय को शिद्दत से समझकर उसकी रक्षा के उपाय करने होंगे, क्योंकि हिमालय हमारा जीवन है। हिमालय भारत की संस्कृति का आधार है। यह हमारे धर्म-अध्यात्म की पृष्ठभूमि और हमारे देश का श्रृंगार है। नदियों के माध्यम से भारत को पेयजल और सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध करवाने के मजबूत आधार हिमालय की उपयोगिता भारत ही नहीं, पूरे विश्व के लिए है। यह हमारा प्रहरी और पर्यावरण का संरक्षक है। हिमालय बेशकीमती जड़ी-बूटियों का खजाना है, जिन जड़ी-बूटियों से हर साल बहुमूल्य औषधियां बनती हैं और उन औषधियों से विश्वभर के करोड़ों लोगों को जीवनदान मिलता है। यह जैव विविधता में महत्त्वपूर्ण भूमिका ही नहीं निभाता, अपितु लाखों वन्य जीवों का भी आश्रय है। वनस्पतियों के आगार के रूप में इसकी प्रसिद्धि देश-दुनिया में है। आज जब पूरा विश्व पर्यावरण संकट का सामना कर रहा है, ऐसी स्थिति में हिमालय की उपयोगिता और उपादेयता के विवेचन और विश्लेषण करना बहुत आवश्यक है। 'स्पर्श हिमालय' मुहिम के तहत इसके लिए एक प्रयास किया जा रहा है।

भौगोलिक आधार पर तो हिमालय का स्थान ऊंचा है ही, हिमालय ने अन्य क्षेत्रों में भी अपना स्थान ऊंचा रखा हुआ है। भारतीय संस्कृति के आलोक में देखें तो यह हमारे ज्ञान का स्रोत रहा है। गंगा-यमुना जैसी सदानीरा नदियों का उद्गम यह क्षेत्र युगों-युगों से अनेक संस्कृतियों का जन्मदाता रहा है। यह अनेक सभ्यताओं का साक्षी रहा है। आदि काल से यह क्षेत्र ऋषि-मुनियों, साधकों की साधना स्थली, विद्वानों की कर्मभूमि और अन्वेषणकर्ताओं के अध्ययन का केंद्र रहा है। यह लाखों सैलानियों, दार्शनिकों, चिंतकों और कवियों का गंतव्य भी रहा है। कालिदास ने हिमालय को पृथ्वी का मानदंड माना है। धरती के संतुलन में हिमालय की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

हिमालय पर्वत श्रृंखला मध्य एशिया और तिब्बत से भारतीय उपमहाद्वीप को अलग करता है। भारत की उत्तरी भौगोलिक सीमा का निर्धारण करने वाली यह श्रृंखला 2,400 किलोमीटर लंबे क्षेत्र में फैली है। गंगा, यमुना, सिंधु, सतलज, व्यास, रावी और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियां हिमालय से निकलकर करोड़ों लोगों के जीवन का आधार बनती हैं। ये लोगों की प्यास नहीं बुझातीं, उनके खेतों की सिंचाई भी करती हैं और रोजगार भी देती हैं। हिमालय की नदियों के बेसिन बहुत बड़े हैं और उनके जलग्रहण क्षेत्र हजारों वर्ग किलोमीटर में फैले हैं। इसीलिए हिमालय को भारत का 'जल बैंक' भी कहा जाता है, क्योंकि यह देश की 65 प्रतिशत आबादी को पानी की आपूर्ति करता है। यह देश के नौ राज्यों में विस्तीर्ण है और देश की 17 प्रतिशत भूमि हिमालय से आच्छादित है। हिमालय के 67 प्रतिशत भू-भाग पर वन क्षेत्र हैं तथा 13 प्रतिशत भूमि पर खेती की जाती है। देश के 1.3 प्रतिशत वन इसी हिमालय क्षेत्र में हैं। भारत को हिमालय असीमित लाभ देता ही है, यह 18 अन्य देशों के लिए भी लाभकारी है। यह घना और असीमित जैव विविधता वाला क्षेत्र है।

हिमालय हमारे पर्यावरण संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन शोध से पता चला है कि हिमालय का पर्यावरण तेजी से बदल रहा है। हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने से झीलें बनने लगी हैं। ऐसी स्थिति में हिमालय का गहन विश्लेषण करना और हिमालय की उपयोगिता से जनमानस को अवगत कराना आवश्यक हो गया है।

'स्पर्श हिमालय' मुहिम के केंद्र में हिमालय को लेकर यही चिंता और चिंतन विद्यमान है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री और उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ0 रमेश पोखरियाल निशंक ने इस अवधारणा के तहत लक्ष्य रखा है कि हिमालय से जुड़ी अधिक से अधिक जानकारी विश्वभर में प्रसारित की जाए और आम जन को हिमालय का महत्त्व बताया जाए। हिमालय के अस्तित्व के कारण ही हमारा अस्तित्व रहेगा, इस सिद्धांत के तहत डॉ0 निशंक का मानना है कि हिमालयी